रिकार्ड:- निश्चल से लडाई... ओम शान्ति प्रातःक्लास 16-5-67

बच्चे जो अच्छे सेन्सीबुल और समझदार है वो अर्थ तो अच्छी रीती समझ जाते है। जिनकी वुधी योग सुखधाम शान्तिधाम की तरफ ही है। क्योंकि जिनका वुधी योग स्वर्ग तरफ है उनको ही तूफान लगता है। बाप तो अब तुम्हारा मुहँ फेरते है। अज्ञान काल मे भी पुराने घर से मुह फिर जाता है। फिर नये मकान को याद करते रहते है कि कब तैयार होवे। अब तुम बच्चो को भी यही ध्यान है कि कब हमारे स्वर्ग की स्थापना हो जावे। स्वर्ग को तो जानते हो ना। तुम्हारा वुधी का योग स्वर्ग की तरफ है। यह भी तुम जानते हो कि शान्ति धाम मे जाकर फिर सुखधाम मे आवेंगे। इस दुःखधाम से तो सबको ही जाना है। सारी सृष्टी के मनुष्य मात्र को। बाप समझाते रहते है कि बच्चो अभी स्वर्ग के दवार खुल रहे है। अब तुम्हारा वुधी योग हेवन की तरफ जाना चाहिये। हेवन मे जाने वाले को कहा जाता है पवित्र। हैल मे जाने वाले को अपवित्र कहा जाता है। गृहस्थ व्यवहार मे रहते हुये भी वुधी योग हेवन की तरफ जाता है। इसमे एक ही घर मे बाप का वुधी योग हेवन तरफ है और बच्चे का वुधी योग नर्क की तरफ है तो दोनो एक ही घर मे रह कैसे सकते है। हंस और बगुले दोनो रह नही सकते है2 वहुत मुश्किल है। उनका वुधी योग है ही पांच विकारो की तरफ। वो हैल तरफ जाने वाले वो हेवन तरफ जाने वाला दोनो इकठे रह नही सकते। बडी मंजिल है। बाप देखते है कि मेरे बच्चे का मुह हैल की तरफ है। हैल तरफ जाने विना रह ही नही सकता है तो फिर क्या करना चाहिये। जरूर आपस मे झगडा होगा। कहेंगे यह भी कोई ज्ञान है कि बच्चा शादी नही करे। गृहस्थ व्यवहार मे रहते तो बहुत है ना। बच्चे का मुख हैल तरफ वो चाहती है कि हम वेशालय मे जावे। विषय वैतरणी नदी मे गोते खाऊं। बाप कहते है कि नर्क की तरफ वुधी नही रखो परन्तु बाप का भी कहना नही मानती है तो फिर क्या करना चाहिये। इस पर वहुत कडी बाते है। बाप का भी नही मानते तो लाचारी हालत मे धक्का देकर फिर उसका कब मुह भी नहीं देखना चाहिये। क्योंकि पलीती वहुत हो गये है ना। यह सारा आत्मा मे है। बाप की आत्मा कहती है कि हमने डिवोर्स किया है। मेरा कहना नही मानती हो? कोई तो ब्राहमण भी बनते है फिर वुधी चली जाती है फिर वुधी चली जाती है हैल तरफ तो वो जैसे कि अपने को जैसे कि डवल पाते है। एक दम रसातल मे चले जावेंगे। बच्चो को समझाया गया है कि यह है ज्ञान सागर की दरवार। भक्ति मार्ग मे तो इन्द्र दरवार भी कहा जाता है। पुखराज परी, माणिक परी, वहुत ही नाम रखे हुये है। क्योंकि ज्ञान डांस करते है ना। किस्म-2 की परिया है। वो भी पवित्र चाहिये अगर किसी अपवित्र को ले आवे तो सजा मिल जावेगी। इसमे वहुत ही पावन चाहिये। यह ज्ञान घर मे भी वहुत ही घोटाला डालता है। वहुत है जिनको बच्चे बच्चियाँ है। आज उनको शादी करवाते है। घर मे रखेंगे, अब उनका वुधी योग तो है हैल तरफ। विषय गटर मे एक दम कूद पडते है। वहुत बडी मंजिल है। स्त्रीयां भी कहती है कि हम हेवन मे जाना चाहती हूं। अब पति नही चलते है तो क्या हाल होगा। हंस और बगुले इकठे रह नही सकते है। फिर लडाई चलती है। मंजिल तो वहुत ऊंची है ना। इस ज्ञान को कोई भी नही जानते है। ना ही किसी शास्त्रो मे ही यह ज्ञान है। इसलिये ही कहते है कि स्त्री और पुरुष भाई-बहन कैसे हो सकते है? यह तो बिलकुल ही असम्भव है। इसलिये वो झाड़ जल्दी बढ़ता नही है। थोडा सा निश्चय हुआ फिर माया एक दम थप्पड़ गिरा देती है। तूफान है ना। छोटा सा दीवा उसको तो एक ही वार तूफान लगने से गिरा देता है। दूसरो को भी विकार मे गिरता देख कर खुद भी गिर पडते है। इसमे तो वहुत वुधी चाहिये समझने की। गाया भी हुआ है अबलाओ पर अत्याचार। कोई-2 को पूतनायें सूपनखायें भी वहुत-2 अत्याचार करती है। एकदम नाक मे दम कर देती है। विकार विना रह ही नही सकती है। पति से विकार नही मिला तो फिर के पिछाडी पड़ती है। बडे-2 घरों मे वहुत ऐसी-2 रहती है। वहुत गन्दी होती है। इसलिये ही कहा जाता है कि काम

[illegible] नभाशु है। यह है गेट वे टू हेल। उनसे तो बहुत नफरत आनी चाहिये। बाबा बहुत न[illegible] दिलाते है अभी। आगे यह बात नही थी। हेल तो अभी है नाँ। सन्यासी लोग भी नफरत दिलाते है। कहते है कि स्त्री सर्पण है। वास्तव मे तो खुद भी सर्प होते है। खुद ने ही स्त्री को सापनी बनाया। मेल ही शादी करते है तो विकार मे जाना शुरू करते है। इसलिये ही द्रोपदी ने पुकारा है। यह अभी की ही बात है। बान्धेली भी अभी ही है। बिगर किन्ना रह नही सकते है। फिर कोई बहाना बना कर निकल पड़ती है। पति को कही से मालूम पड़ गया तो खावेगी मार। ऐसी स्त्री कोई मुश्किल ही होगी तो जो कि विकार के लिये पति को मरती होगी। क्योंकि अबला है नाँ। उनमें इतनी ताकत नही रहती है। अबलाये ही पुकारती है। अभी कितनी अच्छी रीती बाप समझाते है फिर भी कोई कौड़ी मे बैठता नही है। यह गोले का चित्र बडा अच्छा है। गेट वे टू हेवन इस गोले के चित्र से बहुत अच्छी रीती समझा सकेंगे। सीढी से भी इतना नही जितना कि उससे समझेंगे। दिन प्रति दिन परेशान भी होती ही जाती है। बाप कहते है कि आज जो तुमको बिलकुल ही नया डायरेक्शन देते है। पहले से ही थोडेही सब डायरेक्शन दे देंगे। दिन प्रति दिन नये-2 डायरेक्शन मिलते रहते है। कितनी मुशकलात हो जाती है। बाप बच्चे की शादी नही करे तो कितनी मुश्कल हो जाती है। कोई फिर बच्चा ज्ञान मे है। शादी नही करना चाहता है तो माँ-बाप क्या हाल कर देते है। एकदम पुलिस के हवाले कर देते है। आजकल तो राज्य ही जैसे कि पुलिस का है। मार-मारी जो कि उसकी हड्डी ही तोड़ डाली। कैसी दुनियाँ है। कितना बच्चो मे मोह रहता है। बच्चा मर जाता है तो एक दम दिवाने हो जाते है। अथाह दुःख है। ऐसे नही कि शाहुकार है तो खूब ही सुख है नही। अनेक प्रकार की बिमारियाँ लगी रहती है। फिर हास्पिटल मे पड़े रहते है। गरीब जनरल वार्ड मे पड़े रहते है। शाहुकारो को अलग-2 वार्ड मिल जाता है। परन्तु दुःख तो जैसा ही गरीब को वैसा ही शाहुकार को भी होता ही है। सिर्फ उनको स्थान अच्छा मिलता है। अभी तुम बच्चे जानते हो कि हमको बाप पढा रहे है। बाप ने अनेको बार पढाया है। अपने दिल से पूछना चाहिये कि हम पढ़ते है कि नही। कितनो को पढ़ाते है। अगर पढ़ावेंगे नही तो क्या पद पावेंगे। रोज रात को अपना चार्ट लिखो। आज किसीको दुःख तो नही दिया क्योंकि कहती है कि कोई को दुःख नही दो और ही रस्ता बताओ। जो पूरा धारती होगा उसको हाट टच होगा। इसमे तो बर्तन च चाहिये सोने का जिसमे यह अमृत ठहर सके। जैसे कहते है नाँ शेरनी के दुध के लिये सोने का बर्तन चाहिये। क्योंकि उनका दुध बहुत भारी ताकत वाला होता है। शेर से भी शेरनी बहुत छिस्ती होती है। उनका बच्चो मे मोह रहता है। कोई करे देखगी तो एकदम उछल पड़ेगी समझेगी कि कही कोई बच्चे को मार नही डाले। यहां पर भी बहुत बन्धिरियाँ है जिनका पति बच्चो आद मे मोह है। अबतुम बच्चे जानते हो कि स्वर्ग के गेट के कैसे खुलते है। कृष्ण के चित्र मे बहुत अच्छा क्लीयर लिखा हुआ है। इस लडाई के बाद स्वर्ग के गेटस खुलते है। वहा बहुत थोडे मनुष्य होते है। बाकी सब मुक्ति धाम मे चले जाते है। सजाये बहुत खानी पड़ती है। जो भी पाप कर्म किया है एक-2 जन्म मे सजा खाते सा० करते जावेंगे। फिर पद पाई पैस का पा लेंगे। याद मे ना रहने कारण विकर्म विनाश नही होते है। तो घर मे बाप का मुह स्वर्ग की तरफ तो बच्ची का मुह नर्क की तरफ तो उसको धक्का देकर उसका मुह भी नही देखना चाहिये। उनको देखने से ही नफरत आवेगी। वो तो जैसे कि गटर मे रहने वाले है। उसको ही विष्य वैतरणी नदी कहा जाता है। उसको विष्य वैतरणी नदी कहा जाता है। शास्त्रो मे भी कितना झूठ है। कह देते है कि गीता मे भगवानोवाच्य है कि मै सर्वव्यापी हूँ। तो खुद भी गिरते है। सुनने वालों को भी गिराते है। गीता का भी प्रभाव कितना है। परन्तु फायदा तो कुछ भी नही है नाँ। जहाँ भी जाओ कह देंगे ईश्वर सर्वव्यापी है। और यह कहा से सुना? कहेंगे भारत से। भारत के शास्त्र (गीता) की ही बात है। भारत ही निमित्त बना है नर्क मे गिराने के। बाप खुद नर्क मे जाता है [illegible] रचना को

रचना को कहा ले जावेगा। नर्क मे ही जावेगा। जब तक कि स्वर्ग के गेट का पता पड़े। आज कल तो शादियों की सीजन है। पोप आते है तो हजारो शादियां होती है। कल अखबार मे पडा था। पुरी का जो शंकराचार्य है उसने कहा है कि जैसे मुसलमान लोग 4-4 शादियां कर बच्चों की वृधी करते है। तो वो जोर भरते जाते है। तो हिन्दुओं को भी छुटी मिलनी चाहिये। 4-4 शादी करे और बच्चे पैदा करे। तुम लोगों ने अखबार मे शायद पडा नही है। जैसे कई-2 अखबार पढ़ना मिस कर देते है वैसे ही कई बच्चे है कि वो मुरली भी मिस कर देते है। बहुत अच्छे-2 बच्चे इसमे गफलत बहुत करते रहते है। समझते है कि नही पढा तो क्या हुआ। हम तो पास हो गये है। मुरली की परवाह नही करते ऐसे-2 देह अभिमानी बहुत है बाबा जानते है। इसलिये ही यहां भी जब आते है तब भी बाबा पूछते है कि तुमने बहुत मुरलियां नही पढी हुई होगी? पता नही उनमे कोई बहुत अच्छा पुआईन्टस हो। पुआईन्ट राज निकलते है नां। तो एक ही घर मे बाप का वृधी योग एक तरफ, बच्चे का दूसरी तरफ तो वो हो जाता है पापात्मा। वो पुण्यात्मा। वो याद की यात्रा पर है। वो गटटर मे जाने की यात्रा पर है। परन्तु आजकल मोह भी तो बहुत है नां। ऐसे भी बहुत सैन्टर्स पर आते है, परन्तु धारना कुछ भी नही ज्ञान नही। श्रीमत पर नही चेलगें तो पद थोडेई मिलेगा। सत बाप सत टीचर की ग्लानी कराने पर कब ठोर नही पाते है। यह राजयोग है। परन्तु सब तो राजा नही बनेगें नां। प्रजा भी बननी है। नम्बरवार मतबें होते है नां। सारा मदार ही है याद पर। जिस बाप से विश्व की राजाई मिलती है। उनको याद नही कर सक्ते हो? तकदीर मे ही नां हो तो फिर बाप हीतदबीर भी क्या करे? बाप तो कहते है कि याद की यात्रा पर ही रहना है। इससे ही पाप भस्म होगें। तो पुरूषार्थ करना चाहिये नां। बाबा कोई ऐसे भी नही कहते है कि खाना पीना नही खाओं। हमारा कोई हठ योग नही है। चलते फिरते सब कुछ काम करते, जैसे कि आशिक माशूक को याद करते है। उनका नाम रूप का प्यार होता है। हमारा हमारे पास भी बहुत बच्चिया है जो कि एक दो को नही देखगें तो तडफ मरेगें। आपस मे मिलती है तो बस....पांच विकार बहुत शैतान है। कोई नां कोई रूप मे नाक से एकदम पकड़ लेते है। गुड जानें गुड की गोथरी जाने। माया बहुत फसाती है। एक दो से मिले बिना रह नही सकते है। अब वो देही अभिमानी कैसे बनेगें? बाप को याद कैसे करे। यह माया के विघ्न आते है। माया का तूफानप किसीको भी छोड़ता नही है। बच्चे तो झट अंधेरे मे आ जाते है। देह अभिमान मे आना अंधेरा है। फिर अंधेरे मे ठोकरे खाते है माया बडी जबरदस्त है। यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक कैसे बने यह किसीको भी पता नही है। तुम तो कहते हो कि कल की बात है कि वो राज्य करते थे। मनुष्य तो लाखो वर्ष कह देते है। बाबा ने मनुष्यों को एकदम पत्थर बुधी बना दिया है। अब तुम पत्थर बुधी से पारस बुधी बनते हो। पारसनाथका मन्दिर भी है परन्तु वो कौन है, यह कोई नही जानते। मनुष्य बिलकुल ही घोर अंधेरे मे है। अब बाप कितनी अच्छी बाते समझाते है। फिर तो बाकी हर एक की बुधी पर है। पढाने वाला तो एक ही है नां। पढने वाले तो ढेर होते जावेगें। गली-2 मे तुम्हारा स्कूल हो जावेगा। गेट वे टू हैवन। मनुष्य एक भी नही जो समझे कि हम नर्क मे है। कितने बड़े-2 सन्यासी आद है जिनको सोने चांदी की कुर्सी आदपर बिठाते है। बाप समझाते है कि सब भ्रष्टाचारी पुजारी है। पूज्य होते ही है सतयुग मे। पुजारी होते है कलियुग मे। मनुष्य फिर समझते है कि भगवान ही पुज्य पुजारी बनते है। आप भी भगवान हो। आप ही यह सब खेल करते हो। आप ही विषय वासना मे गिर जाते हो। इसकोई से भी विकार किया तो भी मालिक हो। तुम भी भगवान तो हम भी भगवान। कितनी शैतानी है। यह है ही रावण राज्य। मीठे ने -